Serving Education for Last 40 Years

NEERAJ®

M.G.P.E.-8

शांति और संघर्ष समाधान का गाँधीवादी दृष्टिकोण

(Gandhian Approach to Peace and Conflict Resolution)

Chapter Wise Reference Book
Including Many Solved Sample Papers

Based on

I.G.N.O.U.

& Various Central, State & Other Open Universities

By: *Anil Kumar Mishra*

NEERAJ PUBLICATIONS
(Publishers of Educational Books)

Mob.: 8510009872, 8510009878 E-mail: info@neerajbooks.com
Website: www.neerajbooks.com

MRP ₹ 280/-

Content

शांति और संघर्ष समाधान का गाँधीवादी दृष्टिकोण

(Gandhian Approach to Peace and Conflict Resolution)

Question Paper—June-2024 (Solved) 1
Question Paper—December-2023 (Solved) 1-3
Question Paper—June-2023 (Solved) 1-2
Question Paper—December-2022 (Solved) 1-2
Question Paper—Exam Held in March-2022 (Solved) 1-2
Question Paper—Exam Held in August-2021 (Solved) 1
Question Paper—Exam Held in February-2021 (Solved) 1
Question Paper—December, 2019 (Solved) 1
Question Paper—June, 2019 (Solved) 1-3
Question Paper—December, 2018 (Solved) 1-3
Question Paper—June, 2018 (Solved) 1
Question Paper—December, 2017 (Solved) 1-2
Question Paper—June, 2017 (Solved) 1

S.No.	Chapterwise Reference Book	Page
1.	शांति की समझ (Understanding Peace)	1
2.	सहिष्णुता, समरसता और क्षमाशीलता (Tolerance, Harmony and Forgiveness)	8
3.	सामुदायिक शांति (Community Peace)	14
4.	राष्ट्रों के बीच शांति (Peace Among Nations)	20

S.No.	Chapterwise Reference Book	Page

5. संघर्ष के स्रोतों की समझ 27
(Understanding Sources of Conflict)

6. संघर्ष समाधान का दृष्टिकोण 34
(Approaches to Conflict Resolution)

7. संघर्ष समाधान का गाँधीवादी दृष्टिकोण 43
(Gandhian Approach to Conflict Resolution)

8. शांति और संघर्ष समाधान का गाँधीवादी दृष्टिकोण का अनुप्रयोग (केस अध्ययन) 52
(Applications of Gandhian Approach to Peace and Conflict Resolution [Case Studies])

9. उपवास 60
(Fasting)

10. हड़ताल 66
(Strike)

11. संवाद और समझौता 74
(Dialogue and Negotiation)

12. मध्यस्थता और सामंजस्य 82
(Mediation and Reconciliation)

13. नौआखली 90
(Noakhali)

14. उत्तर-पूर्व/कश्मीर 97
(North-East/Kashmir)

15. श्रीलंका/फिलिस्तीन 105
(Sri Lanka/Palestine)

16. तिब्बत/म्यांमार/भूटान 113
(Tibet/Myanmar/Butan)

■ ■

Sample Preview
of the
Solved
Sample Question
Papers

Published by:

NEERAJ PUBLICATIONS

www.neerajbooks.com

QUESTION PAPER

June – 2024

(Solved)

शांति और संघर्ष समाधान का गांधीवादी दृष्टिकोण

(Gandhian Approach to Peace and Conflict Resolution) **M.G.P.E.-8**

समय : 2 घण्टे] *[अधिकतम अंक : 50*

***नोट :** कुल पाँच प्रश्नों के उत्तर दीजिए। प्रत्येक भाग में से कम-से-कम दो प्रश्न अवश्य कीजिए। सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।*

भाग-I

प्रश्न 1. गाँधी सत्य और अहिंसा को शांति के जुड़वाँ सिद्धांत क्यों मानते थे? व्याख्या कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-1, पृष्ठ-4, 'गाँधीजी की शांति का दोहरा सिद्धांत : सत्य और अहिंसा'

प्रश्न 2. गाँधीजी के अनुसार असहिष्णुता का विरोध करने के तरीके और साधन क्या हैं?

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-2, पृष्ठ-10, 'असहिष्णुता का प्रतिरोध करना' पृष्ठ-12, प्रश्न 5

प्रश्न 3. विश्व संघ के बारे में गाँधी के विचारों की व्याख्या कीजिए और यह कैसे राष्ट्रों के मध्य शांति सुनिश्चित कर सकता है?

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-4, पृष्ठ-22, 'गाँधीजी, विश्वसंघ और राष्ट्रों के बीच शांति'

प्रश्न 4. संघर्ष के कारण और स्रोत क्या हैं?

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-5, पृष्ठ-27, 'संघर्ष के कारण', पृष्ठ-28, 'संघर्ष के स्रोत'

प्रश्न 5. निम्नलिखित पर संक्षिप्त टिप्पणियाँ लिखिए–

(क) मध्यस्थता

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-12, पृष्ठ-82, मध्यस्थता की संकल्पना'

(ख) सत्याग्रह के सिद्धांत

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-7, पृष्ठ-45, 'सत्याग्रह के सिद्धांत'

भाग-II

प्रश्न 6. हड़ताल के अर्थ और बुनियादी सिद्धांतों पर एक निबन्ध लिखिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-10, पृष्ठ-69, प्रश्न 1 तथा प्रश्न 2

प्रश्न 7. उपवास का अर्थ और उद्देश्य की व्याख्या कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-9, पृष्ठ-60, 'उपवास : अभिप्राय उद्देश्य, पृष्ठ-63, प्रश्न 1

प्रश्न 8. शांति सेना के विचार का वर्णन कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-12, पृष्ठ-84, 'शांति सेना का विचार' तथा पृष्ठ-87, प्रश्न 5

प्रश्न 9. नोआखाली में गाँधी के लक्ष्य का वर्णन कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-13, पृष्ठ-90, 'नौआखाली क्यों? गांधीजी का मिशन' तथा पृष्ठ-93, प्रश्न 1

प्रश्न 10. निम्नलिखित पर संक्षिप्त टिप्पणियाँ लिखिए–

(क) पहला इंतिफादा

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-8, पृष्ठ-57, 'प्रश्न 4

(ख) असम में विद्रोह।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-14, पृष्ठ-100, 'असम में विद्रोह'

■■

NEERAJ PUBLICATIONS www.neerajbooks.com

QUESTION PAPER

December – 2023

(Solved)

शांति और संघर्ष समाधान का गांधीवादी दृष्टिकोण

(Gandhian Approach to Peace and Conflict Resolution) **M.G.P.E.-8**

समय : 2 घण्टे] *[अधिकतम अंक : 50*

***नोट :** कुल पाँच प्रश्नों के उत्तर दीजिए। प्रत्येक भाग में से कम-से-कम दो प्रश्न अवश्य कीजिए। सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।*

भाग - I

प्रश्न 1. शांतिदूत के रूप में गांधी की विषय-वस्तु का विस्तृत वर्णन कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-1, पृष्ठ-3, 'शांतिदूत के रूप में गाँधीजी'

प्रश्न 2. अस्पृश्यता एक सामंजस्यपूर्ण समाज के अस्तित्व में कैसे बाधा है?

उत्तर–गाँधीजी का मानना था कि जाति व्यवस्था एक सामाजिक बुराई है, परंतु अस्पृश्यता एक पाप है। इसके संबंध में उन्होंने कहा था कि सफाईकर्मी महान होता है। वह ईश्वर के प्रति अपनी सेवाएँ अर्पित करता है। वह समाज को स्वच्छता प्रदान करता है। वह समाज को निरोग रखने में अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इसके बदले में उसे कुछ नहीं मिलता और यदि उसे मिलता भी है, तो मात्र दुत्कार और भर्त्सना ही मिलती है। गाँधीजी का विचार था कि समाज के सभी लोगों को उससे शिक्षा लेना चाहिए, क्योंकि उसका कार्य ईश्वर के प्रति एक महान कर्त्तव्य है।

भारत में अस्पृश्यता के कई रूप हैं, जिन्हें मोटे तौर पर इस प्रकार वर्गीकृत किया जा सकता है–

1. व्यावसायिक अस्पृश्यता–अस्पृश्यता का यह रूप निचली जातियों के पारंपरिक व्यवसायों पर आधारित है, जिन्हें अशुद्ध या प्रदूषित माना जाता है। इन व्यवसायों में हाथ से मैला ढोना, सीवरों की सफाई करना, मृत जानवरों का निपटान करना और चमड़े का काम करना शामिल है। इन व्यवसायों में लगे लोगों को अक्सर अछूत माना जाता है और उन्हें शेष समाज से भेदभाव और बहिष्कार का सामना करना पड़ता है।

2. सामाजिक अस्पृश्यता–अस्पृश्यता का यह रूप निचली जातियों की सामाजिक स्थिति पर आधारित है, जिन्हें निम्न माना जाता है और विभिन्न प्रकार के भेदभाव के अधीन होते हैं। उन्हें अक्सर सार्वजनिक स्थानों, जैसे–मंदिरों, स्कूलों और जलस्रोतों तक पहुँच से वंचित कर दिया जाता है और अलग-अलग क्षेत्रों में रहने के लिए मजबूर किया जाता है। उन्हें विभिन्न प्रकार के सामाजिक बहिष्कार का भी सामना करना पड़ता है, जैसे–सामुदायिक कार्यक्रमों, विवाहों और अन्य सामाजिक समारोहों में भाग लेने की अनुमति नहीं दी जाती है।

3. आर्थिक अस्पृश्यता–अस्पृश्यता का यह रूप उच्च जातियों द्वारा निचली जातियों के आर्थिक शोषण से संबंधित है। उन्हें अक्सर कम वेतन वाली, छोटी-मोटी नौकरियों में काम करने के लिए मजबूर किया जाता है और बेहतर रोजगार के अवसरों तक पहुँच से वंचित कर दिया जाता है। उन्हें विभिन्न प्रकार के आर्थिक भेदभाव का भी सामना करना पड़ता है, जैसे कि वस्तुओं और सेवाओं के लिए अधिक कीमत वसूल की जाती है और ऋण और अन्य वित्तीय सेवाओं तक पहुँच से वंचित किया जाता है।

4. शैक्षणिक अस्पृश्यता–अस्पृश्यता का यह रूप निचली जातियों को शैक्षिक अवसरों से वंचित करने से संबंधित है। उन्हें अक्सर स्कूलों और कॉलेजों में प्रवेश से वंचित कर दिया जाता है। और शिक्षकों और साथी छात्रों से भेदभाव और उत्पीड़न का सामना करना पड़ता है। इससे निचली जातियों के बीच स्कूल छोड़ने की दर अधिक हो जाती है और साक्षरता और शैक्षिक उपलब्धि का स्तर कम हो जाता है।

5. राजनीतिक अस्पृश्यता–अस्पृश्यता का यह रूप राजनीतिक प्रक्रिया से निचली जातियों के बहिष्कार से संबंधित है। उन्हें अक्सर वोट देने के अधिकार से वंचित कर दिया जाता है और चुनाव के दौरान भेदभाव और हिंसा का सामना करना पड़ता है। राजनीतिक संस्थानों और निर्णय लेने वाली संस्थाओं में भी उनका प्रतिनिधित्व कम है, जो उन्हें और अधिक हाशिये पर धकेल देता है और उनके सामाजिक और आर्थिक बहिष्कार को कायम रखता है।

6. धार्मिक अस्पृश्यता–अस्पृश्यता का यह रूप उन धार्मिक मान्यताओं और प्रथाओं से संबंधित है, जो जाति व्यवस्था और अस्पृश्यता को कायम रखते हैं। निचली जातियों को अक्सर अशुद्ध माना जाता है और उन्हें धार्मिक संस्थानों और अनुष्ठानों तक पहुँच से वंचित किया जाता है। उन्हें विभिन्न प्रकार के धार्मिक भेदभाव

NEERAJ PUBLICATIONS www.neerajbooks.com

Sample Preview
of
The Chapter

Published by:

NEERAJ
PUBLICATIONS
www.neerajbooks.com

शांति और द्वंद्व समाधान का गाँधीवादी दृष्टिकोण

(GANDHIAN APPROACH TO PEACE AND CONFLICT RESOLUTION)

शांति की समझ

(Understanding Peace)

1

परिचय

शांति शब्द का अर्थ है–शत्रुता की अनुपस्थिति, आर्थिक कल्याण, जीवन की सुरक्षा और राजनीतिक संबंधों में समानता और निरपेक्षता। युद्ध से मुक्ति, मुकद्दमों और अव्यवस्था से छुटकारा, किसी भी प्रकार के आंदोलन से बचाव, आतंकवाद से छुटकारा और विचारों को मौन रहकर दमन करना शांति के पर्याय के रूप में समझा जाता है। परंतु शांति में ऐसी योग्यता निहित है, जो शांतिपूर्ण साधनों से संघर्ष का समाधान निकालती है और मानव के विकास के लिए यह परम आवश्यक है। इसके अतिरिक्त शांति एक सद्‌गुण है जो हमारी मानसिक स्थिति को उदार और न्यायपूर्ण विचारों में बदल देती है। इस प्रकार शांति में व्यक्तिगत विकास, स्वतंत्रता, सामाजिक समानता, आर्थिक समानता, एकात्मकता, स्वायत्तता और भागीदारी आदि शामिल हैं।

अध्याय का विहंगावलोकन

शांति की संकल्पना की समझ

युद्ध के संबंध में अरस्तू का विचार है कि युद्ध इसलिए किया जाता है, ताकि मानव समुदाय शांति से रहे सके। मार्क्स के अनुसार, शांति और समाजवाद एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। गैलटुंग के विचार से शांति के निम्नलिखित दो आयाम हैं–

- नकारात्मक शांति

और • सकारात्मक शांति

नकारात्मक शांति को स्थैतिक स्थिति के रूप में वर्णित किया गया है। इस स्थिति में हिंसात्मक संघर्ष की कोई जगह नहीं होती। वस्तुत: यह प्रत्यक्ष हिंसा तथा घोषित हिंसा की अनुपस्थिति की सूचक है और इसके अंतर्गत सभी प्रकार के संघर्षों का मध्यस्थता के द्वारा समाधान किया जाता है। संघर्ष या विवाद के शांतिपूर्ण समाधान के लिए किसी भी प्रकार का बल प्रयोग नहीं किया जाता। विवाद के समाधनों के लिए अहिंसात्मक साधनों का प्रयोग किया जाता है। नि:शस्त्रीकरण एवं व्यक्तियों के मध्य सामाजिक और आर्थिक निर्भरता को प्रोत्साहित किया जाता है। सकारात्मक शांति एक अनंत सक्रिय प्रक्रिया है। इसके अंतर्गत विवादों की व्याख्या करके हल निकाला जाता है। वस्तुत: इसका अर्थ है–संरचनात्मक हिंसा को समाप्त कर देना। परंतु इसके लिए दो शर्तों को पूरा करना आवश्यक है–

- पूर्ण विकास;

तथा • समान स्थितियाँ स्थापित करना।

सकारात्मक शांति वस्तुत: वैश्विक न्याय की स्थिति होती है और यह शांति की संकल्पना के केंद्रबिंदु पर आधारित होती है। यह सत्य है कि वैश्विक न्याय की स्थिति अहिंसात्मक उपायों के प्रयोग से ही प्राप्त की जा सकती है। शांति का सरोकार जीवन के सभी स्वरूपों के बीच सद्‌भावना कायम करने से हैं, जिसके लिए सभी व्यक्तियों के सहयोग की आवश्यकता होती है।

शांति की परंपरा

शांतिपूर्ण विश्व का सरोकार व्यक्तियों के बीच सद्भावना और मैत्रीपूर्ण संबंधों से है। यह बात शांति से संबंधित विभिन्न परंपराओं में भी पाई जाती है। बौद्ध परंपरा में निम्नलिखित तथ्यों पर चिंतन किया गया है–

- न्याय, समानता, अहिंसा और दूसरों के हितों का ध्यान रखना।
- मानव सहित सभी जीवों पर दया करना।

बौद्ध परंपरा के अंतर्गत वस्तुतः मानसिक स्थिति कायम रखने, आंतरिक शांति तथा संस्कृति में सद्भावना को कायम रखने का प्रयास किया गया है। एक ग्रीक दार्शनिक के अनुसार, 'नागरिक अव्यवस्था के न होने की शर्त पर ही विश्व-शांति के विचार को संकल्पित किया जा सकता है।' रोम और मध्यकाल में शांति का सरोकार समाज की इकाइयों के बीच स्थायी संबंधों को स्थापित करने से था। यह हिंसा पर नियंत्रण स्थापित करने का प्रभावकारी साधन था।

वर्तमान युग में समाजवादी आंदोलन की शांतिपूर्ण स्थापना के लिए एक वर्गविहीन समाज की स्थापना पर बल दिया गया है। समाजवादी विचारानुसार, आर्थिक असमानता और दोषपूर्ण राजनीतिक व्यवस्था व्यक्तियों की दयनीय स्थिति के लिए उत्तरदायी है। वस्तुतः समाजवादी आंदोलन के माध्यम से कल्याणकारी राज्य की स्थापना के लिए प्रयास किया गया है।

जॉफ्फरी ऑस्टगॉर्ड जो महात्मा गाँधीजी के अनुयायी थे, अहिंसा के सिद्धांत के द्वारा समाज तथा अर्थव्यवस्था में विद्यमान अन्याय को समाप्त करना चाहते थे। इस प्रकार अहिंसापूर्ण सामाजिक संरचना के लक्ष्य को सामाजिक संबंधों की स्थापना द्वारा प्राप्त किया जा सकता है।

शांति आंदोलन

वर्तमान युग में निरस्त्रीकरण के लिए सैंकड़ों समूह क्रियाशील हैं। वे संगठन जनमत तैयार करने के उद्देश्य से खुले मंच भी उपलब्ध करवाते हैं। युद्ध-पूर्व सरकारी शांति आंदोलन संपूर्ण युद्ध की कपटता के सिद्धांतों पर आधारित था। वस्तुतः इस आंदोलन का कार्य था–अंतर्राष्ट्रीय निधि में सुधार के लिए राजनीतिक तंत्र का सहयोग करना और इसे चर्चों का सहयोग भी प्राप्त था। परंतु प्रथम विश्व युद्ध से इस आंदोलन को एक बहुत बड़ा अघात पहुँचा। निःसंदेह युद्ध को रोकने में अंतर्राष्ट्रीयवादी और युद्ध-विरोधी समुदाय असहाय सिद्ध हुए।

शांति निर्माण

इसका सरोकार एक संक्रमणकालीन कार्यकलाप से है। इसके अंतर्गत इस प्रकार की राजनीतिक, आर्थिक और सामाजिक व्यवस्था कायम की जाती है, ताकि भविष्य में संघर्ष और युद्ध की घटनाएँ उत्पन्न न हों। भविष्य में लम्बे समय तक शांति कायम रखने के उद्देश्य से शांति निर्माण के कार्यों के बीच 'ऊपर से' और 'नीचे से' दूरियाँ बनाई जाती हैं। ऊपर से शांति निर्माण की प्रक्रिया में निम्नलिखित कार्यनीतियाँ अपनाई जाती हैं–

- सशस्त्र गुटों से उनके हथियारों को रखवाना,
- संघर्ष को समाप्त करके अहिंसा की स्थापना,
- अंतर्राष्ट्रीय समुदाय एवं पड़ोसियों को सम्मिलित करना,
- सार्वजनिक व्यवस्था को पुनः जीवित करना,
- राहत कार्यों और पुनर्निर्माण को प्रोत्साहित करना,
- व्यक्तिगत, संगठनों, समुदायों एवं राष्ट्रों के बीच परस्पर संबंध कायम करना,
- शारीरिक हिंसा, भेदभाव, पूर्वाग्रह, अपमान, अधीनता और बल प्रयोग को रोकना,
- आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक तथा धार्मिकता के बीच संबंधों को कायम करना।

शांति निर्माण की 'नीचे से' प्रक्रिया में निम्नलिखित तथ्य शामिल होते हैं–

- पक्षों के मध्य विश्वास विकसित करना।
- स्थानीय स्तर पर समुदायों के बीच आत्मविश्वास उत्पन्न करना।

शांति निर्माण के लिए रचनात्मक संक्रमण तथा सामाजिक मूल्यों को शक्तिशाली बनाना आवश्यक होता है। वस्तुतः शांति निर्माण नीतियों में स्थानीय प्रयास किए जाते हैं।

यह क्रिया निःसंदेह सामाजिक, राजनीतिक तथा संस्थागत संरचनाओं और प्रक्रियाओं के पोषण एवं सहयोग में रचनात्मक भूमिका निभाती है। इस संदर्भ में लेडरॉक ने अपना विचार व्यक्त किया है कि 'शांति का उद्गम प्रायः शांति प्रक्रिया के अंतिम बिन्दु के रूप में देखा जा सकता है।'

शांति निर्माण का दृष्टिकोण

'दि इंस्टीट्यूट फॉर मल्टी ट्रैक डिप्लोमेसी' के अनुसार, शांति निर्माण दृष्टिकोणों के निम्नलिखित तीन प्रकार हैं–

(i) राजनीतिक शांति निर्माण विभिन्न पार्टियों के संबंधों एवं उनके स्रोतों के संबंध में जानकारी प्रदान करता है। यह राजनीतिक स्तर पर अनुबंध, समझौता, शांति समझौता आदि के संबंधों की भी जानकारी प्रदान करता है। इसके अंतर्गत कानूनी संरचना के निर्माण के लिए राजनीतिक आवश्यकताओं एवं शांति व्यवस्था की सीमाओं का भी अध्ययन किया जा सकता है।

www.neerajbooks.com

राजनीतिक शांति निर्माण का कार्य दो संघर्षरत समूहों के मध्य शांति स्थापित करना होता है। वस्तुतः यह राजनीतिक दलों और उनके नेताओं के बीच होने वाले समझौते का परिणाम है।

(ii) संरचनात्मक शांति निर्माण का सरोकार सबसे निचले स्तर, मध्यम स्तर और शीर्ष स्तर पर संसाधनों एवं शक्ति का वितरण, राजनीतिक तथा आर्थिक व्यवस्था, आर्थिक गतिविधियों में सुधार से है। इसके द्वारा एक ऐसी व्यवस्था तैयार की जाती है, जिसके माध्यम से नई शांति-व्यवस्था स्वयं ही अपने आपको प्रदर्शित कर सकती है। इसके अंतर्गत लोग अपनी क्षमताओं के अनुरूप अपनी जागरूकता में वृद्धि करते हैं और स्थानीय स्तर पर निर्णय प्रक्रिया में भाग लेकर राजनीतिक दिशा को प्रभावित करते हैं। वस्तुतः संरचनात्मक शांति निर्माण का उद्देश्य है–योजना और शक्ति के प्रयोग में लोगों की भागीदारी को सुनिश्चित करना तथा सामुदायिक संसाधनों को व्यक्तियों और समूहों में समान रूप से आबंटित करना। परिणामतः भ्रष्टाचार, दमनकारी एवं भेदभाव से संबद्ध व्यवहारों को पूर्ण रूप से समाप्त किया जा सकता है।

(iii) सामाजिक शांति निर्माण का संदर्भ अनुभूति प्रवृत्ति, मत विश्वास, कौशल इत्यादि की युद्धों में चर्चा से है। इसका उद्देश्य है नई संस्कृति उत्पन्न करना। इसका संबंध नई राजनीतिक व्यवस्था से है, जो वास्तविक रूप से लोगों को लाभ पहुँचाए। इसके अतिरिक्त यह राजनीतिक व्यवस्था लोगों के अधिकारों और संपत्ति की सुरक्षा के लिए भी उत्तरदायी हो।

संघर्ष परिवर्तन

यह एक बहुमुखी प्रक्रिया है। इसका उद्देश्य है हिंसा को कम करना तथा सामाजिक न्याय एवं शांति को कायम रखना। इसके लिए संघर्ष से प्रभावित लोगों के प्रति उत्तरदायित्व की आवश्यकता होती है। इसके अतिरिक्त यह ज्ञात है कि संबंधों, व्यवहारों, प्रवृत्तियों में परिवर्तन एक अनवरत चलने वाली प्रक्रिया है। यही कारण है कि संघर्ष रूपांतरण के लिए सांस्कृतिक संदर्भों में एक व्यापक समझ की आवश्यकता होती है।

शांति के साधन के रूप में राज्य और नागरिक समाज

शांति के साधन के रूप में राज्य–वर्तमान काल में कल्याणकारी राज्य शांति-व्यवस्था को विकसित करने में अहम भूमिका निभा सकता है। सकारात्मक शांति में लोगों का कल्याण निहित होता है, जो संघर्ष को समूल नष्ट करने की शक्ति भी रखती है। यही कारण है कि आज राज्य और समाज दोनों शांति को प्रोत्साहित करने की दिशा में अपनी-अपनी भूमिका अदा कर रहे हैं। राज्य द्वारा संपूर्ण समाज के सामान्य हितों को ध्यान में रखकर नई व्यवस्था कायम की जा रही है। संघर्ष को रोकने के लिए निम्नलिखित कदम उठाए गए हैं–

(i) विधियों, नियमों और विनियमों में आधारिक परिवर्तन, ताकि व्यक्तियों और समूहों के कार्यों को एक सीमा तक सुनिश्चित किया जा सके, जिससे समाज में शांति भंग न हो।

(ii) उल्लिखित कानूनों को लागू करने के लिए प्रशासनिक तंत्र की स्थापना करना। अपराध में शांति को भंग करने की क्षमता होती है। इसकी रोकथाम परम आवश्यक है, ताकि समाज में शांति कायम रह सके।

शांति के नागरिक समाज के आयाम–समाज में विद्यमान अन्य संस्थाएं भी हैं, जो संघर्ष को रोकने के लिए और शांति बनाए रखने के लिए अपनी जिम्मेदारी निभाती हैं। वस्तुतः ये संस्थाएं नागरिक समाज कहलाती हैं। गैर-सरकारी संगठन, सामुदायिक कल्याण संगठन और इस प्रकार की अन्य संस्थाएं निम्नलिखित कार्यों पर अपना ध्यान केंद्रित करते हैं–

- सार्वजनिक स्वास्थ्य सुधार,
- अल्पसंख्यक अधिकार संरक्षण,
- गरीबों को कानूनी सहायता उपलब्ध करवाना,
- लोगों को उनके अधिकारों के प्रति जागरूक करना,
- सरकारी कार्यों पर नजर रखना और
- राष्ट्रीय एकता को मजबूत करना।

शांति दूत के रूप में गाँधीजी

गाँधीजी ने कहा था कि मनुष्य को समस्त कार्य मानव कल्याण के लिए करना चाहिए। वे प्रेम, सत्य, शांति तथा ज्ञान के स्थान पर सभी को एक देखना चाहते थे। इसका कारण था कि मानव जीवन की सुरक्षा के लिए यह आवश्यक है एवं यही विचार विश्व शांति के लिए जरूरी भी है।

गाँधीजी ने सत्याग्रह का प्रयोग कर शांति और सद्भावना को स्थापित कर सकें। उनके विचार से शांति के दो स्वरूप हैं–नकारात्मक तथा सकारात्मक। युद्ध की अनुपस्थिति, अलग-अलग जातियों, वर्गों, राष्ट्रों तथा धर्मों के मध्य संघर्ष की अनुपस्थिति नकारात्मक विचार हो सकता है। साथ ही, मानसिक संतुलन, प्रेम, सद्भावना, एकता, सहयोग और प्रसन्नता निःसंदेह सकारात्मक विचार के लक्षण हैं। यह सत्य है कि असत्य ही संघर्ष का स्रोत है और सत्याग्रह की सहायता से संघर्ष को समाप्त किया जा सकता है। अतः सत्याग्रह को स्वीकार करना अनिवार्य है।

www.neerajbooks.com

गाँधीजी की शांति का दोहरा सिद्धांत: सत्य और अहिंसा

सत्य और अहिंसा के विरोधाभासी वातावरण में स्थायी शांति की कामना करना असंभव है। राजनति में अपार शक्ति होती है और यह हर चीज को बदल सकती है। नि:संदेह राजनीतिक शक्ति की सहायता से हम विश्व में परिवर्तन ला सकते है। मनुष्य हर स्थिति में शांति चाहता है। हम कह सकते हैं कि शांति युवाओं का जीवन बदल सकती है। विश्व में शांति स्थापना की दिशा में युवा एक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। वे अन्य लोगों के सामाजिक जीवन को भी खुशहाल बना सकते हैं। गाँधीजी के अनुसार, सभी धर्म शांति तथा सद्‌भावना की शिक्षा देते हैं और इसलिए युवाओं को धर्म की गलत व्याख्या से सावधान रहना चाहिए।

सत्य

गाँधीजी का संपूर्ण जीवन सत्य के प्रति समर्पित रहा। उन्होंने अपनी गलतियों से शिक्षा ली और अपने लक्ष्य को प्राप्त किया। उनके विचार में जीवन के युद्धों में विजय प्राप्त करने के लिए अपने दबावों, भय तथा असुरक्षा से मुक्ति पाना अनिवार्य है। गाँधीजी को सत्य अत्यधिक प्रिय था। उन्होंने यहाँ तक कहा कि 'प्रत्येक समाज और व्यक्ति को किसी भी कीमत पर सत्य का परित्याग नहीं करना चाहिए।' नि:संदेह सभी धर्म और विचारवान समाज सत्य का अभ्यास करते हैं। इसके अतिरिक्त उन्होंने यह भी कहा कि सत्य के मार्ग पर चलना एक पीड़ादायक एवं त्यागपूर्ण प्रक्रिया है। अत: इस मार्ग पर मनुष्य को साहस के साथ आगे बढ़ना चाहिए।

सर्वप्रथम गाँधीजी ने कहा कि 'सत्य ईश्वर है।' फिर उन्होंने अपने कथन को बदलते हुए कहा कि 'ईश्वर सत्य है।' अत: यह नि:संदेह कहा जा सकता है कि सत्य गाँधीजी के दर्शन में 'ईश्वर' है। गाँधीजी का नारा था–'सत्यमेव जयते'। उनका विचार था कि सभी धर्म और दार्शनिक समाज सब एक स्वर से सत्य का समर्थन करते हैं और प्रत्येक व्यक्ति व समाज भी इसका अभ्यास करे। वे यह भी स्वीकार करते हैं कि सत्य का मार्ग कठोर, कठिन, पीड़ादायक और त्यागपूर्ण होता है। सच बोलने के लिए किसी व्यक्ति में नि:संदेह साहस की आवश्यकता होती है।

अहिंसा

गाँधीजी के दर्शन का सार है–सत्य और अहिंसा।

अहिंसा के प्रति सामान्य लोगों का विचार है कि यह कायरों का हथियार है। वस्तुत: यह साहसी लोगों का हथियार है और कुछ महान लोग अपने विशेष कार्य को पूरा करने के लिए इसका प्रयोग करते हैं। गाँधीजी ने अहिंसा के सिद्धांत को 'अहिंसा परमोधर्म' तथा 'वसुधैव कुटुम्बकम्' के सिद्धांत से ग्रहण किया है। इसका उद्देश्य था–बुराइयों, क्रोध और घृणा से समग्र रूप से मुक्ति पाना। इसके द्वारा प्रेम की शिक्षा का प्रचार-प्रसार करना था। हिंदू, बौद्ध, जैन, यहूदियों और ईसाईयों ने अहिंसा और अप्रतिरोध के संदर्भ में अनेक धार्मिक प्रवृत्तियां/पद्धतियां पैदा की थी। गाँधीजी ने यह भी कहा था कि 'सत्य और प्रेम का मार्ग हमेशा ही विजय का मार्ग है।'

गाँधीजी के अनुसार, अहिंसा के पालन के लिए साहस और विश्वास की परम आवश्यकता होती है। अहिंसा एक मूल्यवान सिद्धांत है और मानवता, समाज और राज्य की वास्तविकता पर आधारित विज्ञान भी है। अहिंसा का अर्थ हिंसा को रोकने के लिए अतिरिक्त दुश्मन को भी प्रेम के साथ गले लगाना है। नि:संदेह अहिंसा के व्यवहार के लिए आत्म कष्ट सहन करने की गुणवत्ता की आवश्यकता होती है।

द्वितीय विश्व युद्ध चरण के बाद में शांति आंदोलन

इस दौरान सबसे महान उपलब्धि यह रही कि परमाणु युद्ध के मुद्दों को सार्वजनिक जागरूकता के प्रयास से शांति आंदोलन के रूप में सामने लाया गया। सम्पूर्ण देश की सरकारों को यह शिक्षा दी गई कि किस प्रकार परमाणु शक्ति सम्पन्न राष्ट्रों को झुकाया जाये और तटस्थ रहकर इस जन-विरोध को सफल बनाया जाये। नि:संदेह शांति आंदोलनों के द्वारा मानवतावादियों, उदार और नैतिक भावनाओं को सक्रिय करके संघर्ष के लिए तैयार किया गया।

गाँधीवादी सिद्धांतों को संयुक्त राष्ट्र की मान्यता

संयुक्त राष्ट्र महासभा ने 15 जून, 2007 को महात्मा गाँधीजी के जन्म-दिवस 2 अक्तूबर को 'अहिंसा का अन्तर्राष्ट्रीय दिवस' के रूप में घोषणा की। संयुक्त राष्ट्र का संकल्प शांति, अहिंसा और सशक्तिकरण : '21वीं सदी में गाँधीवादी दर्शन' पर सुझावों का प्रभाव एवं परिणाम है।' इस संकल्प द्वारा गाँधीजी के आदर्शों को सम्मान देना है। वस्तुत: गाँधीजी के सिद्धांत आज के विश्व में प्रासंगिक हैं।

बोध-प्रश्न

प्रश्न 1. शांति से आप क्या समझते हैं ?

उत्तर–शांति शब्द का अर्थ है–शत्रुता की अनुपस्थिति, आर्थिक कल्याण, जीवन की सुरक्षा तथा राजनीतिक संबंधों में समानता एवं निरपेक्षता की अभिस्वीकृति। यह एक ऐसी योग्यता है, जो शांतिपूर्ण साधनों से संघर्ष का समाधान निकालती है। अरस्तू ने ठीक ही कहा था कि 'हम युद्ध करते हैं, ताकि हम शांति से रहें।'